786 / 92

# इश्क़े रसूल की झलकियाँ

## हिस्सा अव्वल

**सहाबा इकराम रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम के इश्क़े रसूल की चंद झलकियों पर ये रिसाला मुशतमिल है।**

### ज़ेरे सरपरस्ती

**पीरे तरीक़त रहबरे शरियत हज़रते अल्लामा व मौलाना अल्हाज मुफ्ती आफ़ाक़ अहमद साहब मुजद्दिदीशैखुल हदीस : अल जामियतुल अहमदिया (क़न्नौज)**

### मुरत्तिब

**हज़रते अल्लामा व मौलाना सैय्यद मुहम्मद नाज़िम अली साहब प्रिंसिपल जामिया निज़ामिया सैय्यदुल उलूम ईदगाह ग्राउण्ड के पास कोंच (जालौन) उ0प्र0**

नामे रिसाला ......................इशके़ रसूल की झलकियाँ हिस्सा अव्वल

मुरत्तिब..................................हज़रते अल्लामा व मौलाना सै0 नाज़िम अली

मुसलेह..................................हज़रते हाफिज़ो क़ारी सैय्यद काज़िम अली

साले तबाअ्त.............................1440 हिजरी. सन् 2018

तादाद..........................................1100

क़ीमत .......................................30

किताब मिलने के पते............

(1) चिश्ती कुतुब खाना (2) अहमद मंसूरी ज्वैलर्स
कोंच

(3) सैय्यद नुसरत अली (4) सैय्यद आरिफ अली
बघौरा उरई

(5)सैय्यद मेराज अली (6) चाँद बाबू जनानी असपताल के सामने
दतिया

(7) सैय्यद वाजिद अली शिवपुरी(8) वसीम बरकाती किराना स्टोर

(9) मो0. अफरोज़ खानकाहे मोहम्मदिया कालपी शरीफ

(10) मो0. हारुन कोंच बर्तन बाज़ार की गली कोंच

## पेशे लफ्ज़

उस खालिके हक़ीक़ी का बे पनाह फज़्लो अहसान है।कि जिसकी गवाही काएनात का ज़र्रा ज़र्रा दे रहा है।फिर उसने एक मखलूक़ ज़मीन मे पैदा की और उस के लिऐ ज़मीन को बिछोना बनाया और उसके लिऐ आसमान का शामयाना रखा.और फिर सबसे फरमाया कि अगर तुम मुझे खुश करना चाहिते हो तो मेरा एक चहीता मेहबूब है।लिहाज़ा तुम उसको खुश करो अगर वो खुश हो गया तो समझो कि तुम से तुम्हारा रब खुश हो गया.फिर उन मे से कुछ लोगों को खास किया जिनको सहाबा कहते हैं।इस लिऐ कि उन्होंने रबके उस मेहबूब पर अपना माल और अपना जिस्म और अपनी जान तक निछावर करदी.अपनी हर हर अदा को उनके जैसा बना लिया.उनका चलना तो सुन्नत के मुताबिक़ और उनका खाना व पीना और सोना जागना सब सुन्नत के मुताबिक़ उनका उठना बैठना सुन्नत के मुताबिक़ हो गया.और उनकी हर बात पर लब्बैक व सअ्दैक कहा.और मैने इस किताब मे हुज़ूर अलैहिस सलाम के इशक़ से मुताल्लिक़ चंद ऐसे वाक़यात लिखे हैं।जिसे पढ़कर हर किसी के दिल मे ऐसा जज़्बा पैदा होगा कि वो दिलो जान से ज़्यादह अपने हुज़ूर अलैहिस सलाम पर मर मिटने को तैय्यार हो जाऐगा.जैसा कि हदीस शरीफ मे है।और कि हज़रते अनस बिन मालिक रज़ि अल्लाहु तआ्ला अन्हु से मरवी है।कि वो फरमाते हैं।कि हुज़ूर अलैहिस सलाम ने फरमाया कि ला योमिनो अहदकुम हत्ता अकूना अहब्बा इलैहि मिवं वालिदिही व वलादिही वन्नासे अजमईन.यानी आप अलैहिस सलाम फरमाते हैं।कि तुम मे से कोई उस वक़्त तक मोमिने कामिल नही हो सकता जब तक कि मै उसके माँ और बाप और उसकी औलाद और तमाम लोगों से ज़्यादह मेहबूब ना हो जाऊँ.

## इन्तिसाब

और इस रिसाला मे हम ने सहाबा इकराम के इशक़ की चंद झलकियाँ पेश की हैं।और हमने इस रिसाला का नाम इशक़े रसूल की झलकियाँ हिस्सा अव्वल रखा है।लिहाज़ा इस रिसाले के ज़रिऐ से हमारे दिलों मे इशक़े रसूल मोजज़न फरमाऐ।और इसके ज़रिऐ से हम सबकी इस्लाह फरमाऐ।आमीन

इसके बाद आप इशक़े रसूल की झलकियाँ हिस्सा दोएम का इन्तिज़ार करें।

इन्शा अल्लाह हिस्सा दोएम जल्द छपकर आ रहा है।

# तक़रीज़े लतीफ

## हज़रत अल्लामा व मौलाना अल्हाज शमशुल क़मर क़ादरी प्रिस्पिल दारुल उलूम बरकाते मुहम्मदिया उरई जालौन

## नहमदुहू व नुसल्लिी अ़ला रसूलिहिल करीम

मोरखा 28/5/ 2016.को हज़रत हाफिज़ो क़ारी सैय्यद काज़िम अली साहब इमाम जामा मस्जिद कोंच की दअ्वत पर एक जलसा में शिरकत हुई जिसमे मौसूफ के बिरादरे अकबर हज़रते अल्लामा व मौलाना नाज़िम अली साहब की मुरत्तिबह रिसाला **इशक़े रसूल की झलकियाँ हिस्सा अव्वल** को चीदह चीदह देखा ज़ेरे नज़र रिसाला हुज़ूर के उन चंद सहाबए इकराम के इशक़ के मुतआ्ल्लिक़ है।जिन्होंने अहकामे खुदा वंदी की ताबेदारी की और रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआ्ला अलैहि वसल्लम के उसवऐ हसना पर अमल करते हुऐ।अपने अपने हलक़ऐ असर मे बनी नोऐ इंसान की खिदमत की.खुद भी सोमो सलात के पावंद रहे और मखलूक़े खुदा को भी रास्त बाज़ी और सच्चाई पर ज़िन्दगी बसर करने का दर्स दिया नई नस्ल को हुज़ूर के इशक़ से क़रीब करने के पेशे नज़र ये रिसाला लिखा गया है।चंद सफहात पढ़ने के बाद अहसास हुआ कि मौसूफ के अंदर खिदमते दीन का बे पनाह जज़्बा है।लेकिन मज़ीद मेहनतो मशक़्क़त और तर्जुबा की ज़रूरत है।.दुआ है।कि अल्लाह तआ्ला अपने हबीब के सदक़े इस किताब को खासो आम के लिऐ नाफे बनाऐ और मौसूफ को अपने असलाफ के तर्ज़ पर तसनीफी काम करने की तौफीक़ बख्शे और मज़ीद ज़ेवरे इल्मो क़लम अता फरमाऐ और उनकी इस काविश को शर्फे कुबूलियत बख्शे. आमीन.

**शमशुल क़मर क़ादरी**
**प्रिसिंपल दारुल उलूम बरकाते मुहम्मदिया**
**उरई जालौन**

**28.मई 1437 हिजरी**

## *हज़रते सिद्दीक़े अकबर रज़ि अल्लाहु तआ्ला अन्हु के इशक़े रसूल की चंद झलकियाँ*

हज़रत मौलाना मुहम्मद इब्राहीम आसी मद्दा ज़िल्लहुल आली के बयान का खुलासा है।इस वाक़ऐ से आप हज़रते सिद्दीक़े अकबर रज़ि अल्लाहु तआ्ला अन्हु के इशक़े रसूल का पता लगाइऐ।एक मरतबा कुफ्फारे कुरैश और मुसलमानों के दरमियान लड़ाई हुई. रसूले काएनात की तरफ से हज़रते सिद्दीक़े अकबर रज़ि अल्लाहु तआ्ला अन्हु थे.और अबू जहल की तरफ से हज़रते सिद्दीक़े अकबर रज़ि अल्लाहु तआ्ला अन्हु के लड़के अब्दुर रहमान बिन अबी बकर थे. अल्लाहु अकबर हज़रते सिद्दीक़े अकबर रज़ि अल्लाहु तआ्ला अन्हु रसूल की मुहब्बत मे अपने लड़के से लड़ाई पर अमादा हैं।लड़ाई के कुछ दिन बाद हज़रते सिद्दीक़े अकबर रज़ि अल्लाहु तआ्ला अन्हु के लड़के इस्लाम लाऐ।एक दिन दौराने गुफ्तुगू अपने वालिद से कहते हैं।कि अब्बा हुजूर लड़ाई के दिन मेरी तलवार आपकी गरदन तक पहुँच चुकी थी लेकिन मैने आपको बाप समझकर छोड़ दिया था.इतना सुनने के बाद हज़रते सिद्दीक़े अकबर रज़ि अल्लाहु तआ्ला अन्हु इरशाद फरमाते हैं।अय मेरे लड़के सुन उस ज़ात की क़सम जिसके क़बज़ऐ कुदरत में मेरी जान है।.अगर मेरी तलवार तुम्हारी गरदन तक पहुँच जाती तो मै इशक़े रसूल मे बेटा समझकर तुझे छोड़ नही देता बल्कि दुशमने रसूल समझकर तुम्हारी गरदन उड़ा देता.देखा आपने हज़रते सिद्दीक़े अकबर रज़ि अल्लाहु तआ्ला अन्हु की मुहब्बते रसूल मुहब्बते औलाद पर ग़ालिब आ गई वाक़ई जो मोमिने कामिल होता है।वो जानो माल इज़्ज़तो आबरू.दोस्तो अहबाब.गोया कि दुनिया व आखिरत की हर चीज़ से ज़्यादह रसूल से मुहब्बत करता है।और यही मोमिने कामिल की पहचान है।.

## *हज़रते सिद्दीक़े अकबर रज़ि अल्लाहु तआ्ला अन्हु के इशक़े रसूल की दूसरी झलक*

एक मौक़ए पर हुजूर सल्लल्लाहु तआ्ला अलैहि वसल्ल ने सहाबा इकराम के से फरमाया कि जिसके पास जो हो वो हाज़िर करे ये सुनकर सहाबए इकराम अपने अपने घरों पर गऐ और जिसके पास जो था वो हाज़िर कर दिया हज़रते सिद्दीक़े अकबर रज़ि अल्लाहु तआ्ला अन्हु अपने घर का तमाम सामान घर की झाड़ू वग़ैरह और यहाँ तक कि आपके कुरते मे जो बटन लगे थे वो भी निकाल कर और

रिसालत मे हाज़िर हो गऐ और हाज़िर होकर अर्ज़ की या रसूल अल्लाह मे अपने घर का तमाम सामान लेकर आपकी बारगाह मे हाज़िर हो गया हूँ।तो हुजूर ने फरमाया कि अय अबू बक्र घर पे क्या छोड़ आऐ हो तो आपने अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह! अपना घर अल्लाह और उसके रसूल के हवाले पर छोड़ आया हूँ।फिर हुजूर ने फरमाया कि अबू बक्र ये कुरते मे बटन की जगह बबूल के काँटे क्यों लगाऐ हैं।तो आपने अर्ज़ किया कि या रसूल अल्लाह अबू बक्र को ये गवारा ना हुआ कि इस कुरते मे बटन लगे रह जाऐं बल्कि मैने हर चीज़ अल्लाह के रसूल की बारगाह मे पेश करदी ताकि अल्लाह और उसका रसूल मुझ से राज़ी हो जाऐं।तो हुजूर ने फरमाया कि अबू बक्र तुम्हारी अदा फरिशतों को बहुत पसन्द आ गई है।तो अल्लाह के तमाम फरिशतों ने भी आज अपने कुरतों मे बटन की जगह बबूल के काँटे लगाऐ हुऐ हैं।.

### ***हज़रते सिद्दीक़े अकबर रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हु के इशक़े रसूल की तीसरी झलक***

जब हुजूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने मक्का से मदीने की तरफ हिजरत की तो उस मौक़ए पर हुजूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने हज़रते सिद्दीक़े अकबर रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हु को साथ लिया और मक्का से चले तो हुजूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने देखा कि हज़रते सिद्दीक़े अकबर रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हु कभी आप से आगे होते हैं।और कभी दाऐं तरफ से आगे बढ़ते हैं।कभी बाऐं तरफ से आगे बढ़ते हैं।और आपके पीछे चलना शुरू कर देते हैं।तो हुजूर ने फरमाया कि अय अबू बक्र हमेशा तूम मेरे पीछे चलते थे और आज क्या बात है।कि तुम मेरे आगे आगे चल रहे हो?तो आपने अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह मेरे माँ बाप आप पर कुरबान हों मै आपके आगे आगे इस लिऐ चल रहा हूँ।ताकि अगर आगे से कोई तीर आऐ तो वो अबू बक्र के लगे और आप बच जाऐं और दाऐ इस लिऐ चल रहा हूँ।ताकि अगर दाऐं तरफ से कोई तीर आपकी तरफ आऐ तो वो भी अबू बक्र को लगे और आप बच जाऐं और बाऐं तरफ से कोई तीर आपकी तरफ आऐ तो वो भी अबू बक्र को लगे और आप बच जाऐं और पीछे से कोई हमला करे या कोई तीर आऐ तो वो अबू बक्र को लगे और आप बच जाऐं।फिर उसी कैफ मे ग़ारे सोर पर पहुँच गऐ उस दुशवार गुज़ार रास्ते मे हुजूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि

उनकी जगह बबूल के काँटे लगा लिऐ और बारगाहे वसल्लम के नाजुक मुकद्दस पाँव ज़ख्मी हुऐ।हज़रते सिद्दीक़े अकबर रज़ि अल्लाहु तआ्ला अन्हु से देखे ना गऐ।तो कन्धों पर सवार कर लिया.

ना देखा जा सका पाऐ मुहम्मद की जराहत को
बसद इसरार कन्धों पर उठाया शाने रहमत को

ये था हज़रते अबू बक्र का इशक़ कि अबू बक्र का जिस्म छलनी हो जाऐ मगर प्यारे मुसतफा के ज़र्रा भर भी तकलीफ अबू बक्र को गवारा नही.

## ***हज़रते सिद्दीक़े अकबर रज़ि अल्लाहु तआ्ला अन्हु के इशक़े रसूल की चौथी झलक***

फिर हज़रते सिद्दीक़े अकबर रज़ि अल्लाहु तआ्ला अन्हु अर्ज़ करते हैं।हुजूर आप ज़रा बाहर ठहरिऐ।मै अंदर जाकर ग़ार को साफ करलूँ. पहले मै जाता हूँ।फिर आप तशरीफ ले जाऐं चुनाँचे ऐसा ही हुआ. ग़ार साफ करके हुजूर सल्लल्लाहु तआ्ला अलैहि वसल्लम से अर्ज़ की हुज़र! तशरीफ लाइऐ।ग़ार साफ कर दिया गया.और ग़ार मे जो सुराख थे हज़रते सिद्दीक़े अकबर रज़ि अल्लाहु तआ्ला अन्हु ने उन सुराखों को अपना कुरता फाड़ फाड़कर बंद कर दिऐ मगर एक सुराख बाक़ी रह गया था जिसके अंदर एक साँप पाँच सौ साल से हुजूर सल्लल्लाहु तआ्ला अलैहि वसल्लम की ज़ियारत करने के लिऐ बैठा हुआ था उसने कई लोगों से ये सुन रखा था कि एक दिन इस ग़ार मे नबीऐ आखिरुज़ ज़मा सल्लल्लाहु तआ्ला अलैहि वसल्लम तशरीफ लाऐंगे
लिहाज़ा वो साँप भी आपका बड़ा आशिक़ था ये सुन्ने के बाद कई सदियों से आपकी ज़ियारत के लिऐ बैठा हुआ था मगर उस से बड़कर आशिक़े रसूल हज़रते सिद्दीक़े अकबर रज़ि अल्लाहु तआ्ला अन्हु थे जो हुजूर की खिदमत के तमाम फराइज़ अंजाम दे रहे थे.तो हज़रते सिद्दीक़े अकबर रज़ि अल्लाहु तआ्ला अन्हु ने उस सुराख मे अपने पैर का अंगूठा लगा लिया और हुजूर सल्लल्लाहु तआ्ला अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया कि या रसूल अल्लाह आप ज़रा आराम करलें तो हुजूर!हज़रते सिद्दीक़े अकबर रज़ि अल्लाहु तआ्ला अन्हु की रान पे सर रखके सो रहे इधर थोड़ी देर के बाद उस साँप ने हज़रते सिद्दीक़े अकबर रज़ि अल्लाहु तआ्ला अन्हु ने अंगूठे मे खुर खुराया ताकि आप उस सुराख से अपना पैर हटालें तो हुजूर सल्लल्लाहु तआ्ला अलैहि

वसल्लम की मुझे ज़ियारत नसीब हो जाए।इधर हज़रते सिद्दीक़े अकबर रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हु ने अपने दिल मे सोचा कि अगर मैने अंगूठा हटा लिया तो कहीं ये साँप हुजूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम तकलीफ ना पहुँचादे इस वजेह से आपने अंगूठा हटाना मंजूर ना किया आखिरकार उस साँप ने आपको डस लिया और उसका ज़हर आपके चढ़ना शुरू हो गया अब हज़रते सिद्दीक़े अकबर रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हु ने सोचा कि अगर हुजूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम को जगाता हूँ।तो आपकी नींद खराब हो जाऐगी लिहाज़ा जब ज़हर ज़्यादह बढ़ा तो हज़रते सिद्दीक़े अकबर रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हु ने रोना शुरू करदिया हुजूर!के चहरे पर जब आँसू गिरे तो हुजूर खुद बा खुद जाग गऐ।और फरमाया कि अय सिद्दीक़ क्या हो गया तो आपने अर्ज़ की या रसूल अल्लाह!मुझे साँप ने डस लिया तो हुजूर ने फरमाया कि अय हज़रते सिद्दीक़े अकबर रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हु घबराओ नही और हुजूर ने अपना लुआबे दहन लगा दिया.अब हज़रते सिद्दीक़े अकबर रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हु फरमाते हैं।कि लुआबे दहन की बरकत से मेरा ज़हर बिलकुल खत्म हो गया.ये थी हज़रते सिद्दीक़े अकबर रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हु के इशक़ की दासतान जिसको मैने यहाँ मुख्तसर ज़िक्र किया.

## ***हज़रते सिद्दीक़े अकबर रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हु के इशक़े रसूल की पाँचवी झलक***

हज़रते उम्मुल मोमनीन आईशा सिद्दीक़ा रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हा फरमाती हैं।कि मेरे अब्बू जान हज़रते सिद्दीक़े अकबर रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हु ने कभी मुझपर नाराज़गी का इज़हार नही किया और ना कभी मुझपर हाँथ उठाया मगर एक बार मेरे अब्बू जान घर आऐ हुऐ थे कि मेरे नबी सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम से गुफतुगू हो रही थी कि अचानक मेरी आवाज़ हुजूर की आवाज़ पर थोड़ी तेज़ हो गई बस फिर क्या था मेरे अब्बू जान तेज़ी मे आऐ और हाँथ उठाकर मुझे मारने ही जा रहे थे कि मैने अर्ज़ की बाबा जान आपने तो कभी मुझे डाँटा और झिड़का नही लेकिन आज इतना जलाल कैसा तो आपने फरमाया कि बेटी आइशह!अबू बक्र सब कुछ बरदाशत कर सकता है।मगर किसी कि आवाज़ मेरे हुजूर से तेज़ हो जाऐ ये मुझे गवारा नही है।और खबरदार आज के बाद मै कभी ये बरदाशत नही करूँगा.इसी तरफ अल्लामा इक़बाल कहते हुऐ नज़र आऐ।कि

गोया कि हज़रते सिद्दीक़े अकबर रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हु हज़रते आईशह से कह रहे थे. की मुहम्मद से वफा तूने तो हम तेरे हैं।
ये जहाँ चीज़ क्या लौहो क़लम तेरे हैं।

### ***हज़रते उमर फारूक़ आज़म रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हु के इशक़े रसूल की चंद झलकियाँ***

जंगे बदर मे हज़रते उमर रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हु का हक़ीक़ी मामू आस बिन हिशाम बिन मुग़ीरह गुस्से मे भरा हुआ जंग के लिऐ। मैदान मे निकला हज़रते उमर रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हु ने आगे बढ़कर मुक़ाबला किया और भाँजे ने मामू के सर पर ऐसी तलवार मारी कि सर को काटती हुई जबड़े तक उतर गई और फारूक़े आज़म रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हु ने क़यामत तक के लिऐ।ये नज़ीर क़ायम करदी कि क़बीला और रिशते दारी सब कुछ इशक़े रसूल पर कुरबान है।. ( तारीखुल खुलफा वगैरह )

### ***हज़रते उमर फारूक़ आज़म रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हु के इशक़े रसूल की दूसरी झलक***

एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने हज़रते उमर रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हु से फरमाया कि अय उमर तुम सबसे ज़्यादा किस से मुहब्बत करते हो?तो हज़रते उमर रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हु ने अर्ज़ की या रसूल अल्लाह सबसे ज़्यादा मै अपनी जान से मुहब्बत करता हूँ।ये सुनकर हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अय उमर अभी तुम्हारा ईमान मुकम्मल नही हुआ है।लिहाज़ा हज़रते उमर रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हु सोच मे पड़ गऐ।कि मेरा ईमान मुकम्मल कब होगा.आपने सोचा कि मै नमाज़ें भी पढ़ता हूँ।इबादतो रियाज़त भी करता हूँ।खताओ से भी बचता हूँ।जन्नतो दोज़ख व फरिशते व अंम्बियाओ मुरसलीन को मानता हूँ।लेकिन फिर भी मेरा ईमान मुकम्मल क्यों नही है।आखिर कार फिर उन्हें जवाब मिल गया कि जब तक रसूल सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम की दिल मे मुहब्बत नही होगी उस वक़्त तक कि कामिल ईमान हो नही सकता.लिहाज़ा आपने अर्ज़ किया कि या रसूल अल्लाह!मेरे माँ बाप आप पर कुरबान मै अपने माँ बाप और अपनी औलाद और अपने रिशते दारों और अपने बाल बच्चों यहाँ तक की अपनी जान से भी ज़्यादा आप से मुहब्बत करता हूँ।जब हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला

अलैहि वसल्लम ने उमर का ये जवाब सुना तो मुसकुराते हुऐ।फरमाया कि हाँ अय उमर!अब तुम्हारा ईमान मुकम्मल हो गया.इसी तरफ एक शायर ने इशारह किया है।. मुहम्मद की मुहब्बत दीन हक़ की शर्ते अव्वल है।

इसी मे हो अगर खामी तो सब कुछ ना मुकम्मल है।

मुहम्मद है।मुताऐ आलम ईजाद से प्यारा

पिदर मादर बिरादर मालो जाँ औलाद से प्यारा

***हज़रते उमर फारूक़ आज़म रज़ि अल्लाहु तआ्ला अन्हु के इशक़े रसूल की तीसरी झलक***

हज़रते उमर रज़ि अल्लाहु तआ्ला अन्हु का ज़माना था कुछ लोग आऐ।एक बार मस्जिदे नबवी मे कुछ लोग आऐ और ऊँची आवाज़ मे बोलने लगे हज़रते उमर रज़ि अल्लाहु तआ्ला अन्हु ने उन्हें बुलाया कहा कौन हो और कहाँ से आऐ हो? कहने लगे कोई शाम का है।कोई किसी मुल्क का है।आप फरमाने लगे तुम्हें पता नही कि ये रोज़ऐ रसूल है।तुम्हें पता नही कि ये हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ्ला अलैहि वसल्लम की मस्जिद है।ला तरफऊ असवातकुम फौक़ा सौतिन नबी तुम्हें खबर भी है।कि तुम कहाँ आऐ हो?फरमाया कि अगर तुम मदीने के रहने वाले होते मै तुम्हें दुर्रों से मारता तुम्हें सज़ा देता तुम्हे अदबे रसूल का नही पता तुम्हे रसूल सल्लल्लाहु तआ्ला अलैहि वसल्लम के तरीक़े का नही पता.

***हज़रते उमर फारूक़ आज़म रज़ि अल्लाहु तआ्ला अन्हु के इशक़े रसूल की चौथी झलक***

हज़रते उमर रज़ि अल्लाहु तआ्ला अन्हु काबा शरीफ मे संगे असवद को जब चूम रहे हैं।तो कह रहे हैं।कि अय पत्थर मै तुझे इसलिऐ नही चूमता कि तू एक जन्नती पत्थर है।बल्कि मै इस लिऐ।चूम रहा हूँ।कि मुसतफा ने तुझे चूमा है।.

***हज़रते उमर फारूक़ आज़म रज़ि अल्लाहु तआ्ला अन्हु के इशक़े रसूल की पाँचवी झलक***

हज़रत मौलाना मुहम्मद इब्राहीम आसी मद्दा ज़िल्लहुल अली के बयान का खुलासा है।व मिनहुम मन्इ यलमिज़ुका फिस सदाक़ाति.इस आयत का शाने नुज़ूल ये है।कि एक मुनाफिक़ जो ब ज़ाहिर नमाज़ी और इबादत गुज़ार था.उसका नाम हरकूस बिन ज़हर है।हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ्ला अलैहि वसल्लम माले ग़नीमत तक़सीम फरमा रहे थे.उस शख्स ने कहा या रसूल अल्लाह!अदल कीजिऐ।हुज़ूर सल्लल्लाहु

तआ्ला तआ्ला अलैहि वसल्लम ने फरमाया तुझे खराबी मै अदल नही करूँगा तो अदल कौन करेगा ?उसी वक़्त हज़रते उमर फारूक़ रज़ि अल्लाहु तआ्ला अन्हु ने अर्ज़ किया मुझे इजाज़त दीजिऐ कि उस मुनाफिक़ की गरदन मार दूँ. हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ्ला अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि उसे छोड़ दो.उसके और भी हमराही हैं।कि तुम उनकी नमाज़ों के सामने अपनी नमाज़ उनके रोज़ों के सामने अपने रोज़ों को हक़ीर समझोगे और वो कुरआन पढेंगे उनके गलों से ना उतरेगा.वो दीन से ऐसे निकल जाऐंगे.जैसे कमान से तीर फारूक़ रज़ि अल्लाहु अन्हु हुज़ूर अक़दस की सल्लल्लाहु तआ्ला अलैहि वसल्लम की शान मे इतना माअ्मूली सा लफज़ बरदाशत ना कर सके.उस मुनाफिक़ के क़त्ल पर आमादा हो गऐ।. ( दौरे हाज़िर की तक़रीरें स0.146 उर्दू )

### *हज़रते उमर फारूक़ आज़म रज़ि अल्लाहु तआ्ला अन्हु के इशक़े रसूल की छटवीं झलक*

हुज़ूर अक़दस की सल्लल्लाहु तआ्ला अलैहि वसल्लम के विसाल के तीन दिन बाद तमाम सहाबा परेशान थे और कफे अफसोस मे डूबे हुऐ थे.तो हज़रते उमर फारूक़ रज़ि अल्लाहु तआ्ला अन्हु मियान से तलवार निकालकर बाहर आऐ और आपने तमाम सहाबा मे एक ऐलान किया कि खबर दार!ये किसने कहा कि मेरे आक़ा सल्लल्लाहु तआ्ला अलैहि वसल्लम विसाल फरमा चुके हैं।मेरे आक़ा सल्लल्लाहु तआ्ला अलैहि वसल्लम कल भी ज़िन्दा थे और आज भी ज़िन्दा हैं।जिसने भी हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ्ला अलैहि वसल्लम बारे मे ऐसी बात कही उसकी मै गरदन मार दूँगा.ये था आप रज़ि अल्लाहु तआ्ला अन्हु का इशक़े रसूल.

### *हज़रते उसमाने ग़नी रज़ि अल्लाहु तआ्ला अन्हु के इशक़े रसूल की चंद झलकियाँ*

हज़रत मौलाना खादिम हुसैन रिज़वी मद्दा ज़िल्लहुल अली के बयान का खुलासा है।ये बाते करते कि हम भी आशिक़े रसूल हैं।आशिक़े रसूल जो होते हैं।.फिर वो घर का सारा सामान हुज़ूर के पाँव मुबारक पर रख देते हैं।जो आशिक़े रसूल होते वो साढ़े नौ सो ऊँट और पचास घोड़े लाकर हुज़ूर को दे देते हैं।फिर सोना चाँदी की गठरी हज़रते उसमाने ग़नी बाँध कर लाऐ।और हुज़ूर इतने खुश हुऐ।कि अपनी गोद मे युक़ल्लिबुहा हुज़ूर ऐसे उछाल रहे थे उसमाने ग़नी का माल फरमाया मा दर्रा उसमानो मा अमिला बादल यौम ये कोई

सवाल है।कि हम भी आशिक़े रसूल हैं।.इसी तरफ इशारह करते हुऐ अल्लामा इक़बाल कहते हैं।.ये ग़ाज़ी ये तेरे पुर असरार बंदे

जिन्हे तूने बख़्शा है।ज़ौक़े खुदाई
ज़मीन इनकी ठोकर से सहरा व दरिया
सिमटकर पहाड़ इनकी हैबत से राई
दो आलम से करती बे गाना दिल को
अजब चीज़ है।लज़्ज़ते आशनाई

## ***हज़रते उसमाने ग़नी रज़ि अल्लाहु तआ्ला अन्हु के इशक़े रसूल की दूसरी झलक***

हज़रत मौलाना हाजी यूसुफ रज़ा अत्तारी मद्दा ज़िल्लहुल अली के बयान का खुलासा है।एक मरतबा हज़रते सैय्यदुना उसमाने ग़नी रज़ि अल्लाहु तआ्ला अन्हु ने सरकार दो आलम सल्लल्लाहु तआ्ला अलैहि व आलिही वसल्लम को और आपके असहाब को अपने घर ज़ियाफत पर मदऊ किया यानी खाने की दावत दी. मेरे आक़ा मदीने वाले मुसतफा सल्लल्लाहु तआ्ला अलैहि वसल्लम ने उस दावत को कुबूल फरमाया और सहाबा इकराम अलैहिमुर रिज़वान के साथ हज़रते सैय्यदुना उसमाने ग़नी रज़ि अल्लाहु तआ्ला अन्हु के घर की तरफ चले नबी करीम सल्लल्लाहु तआ्ला अलैहि व आलिही वसल्लम हज़रते सैय्यदुना उसमाने ग़नी रज़ि अल्लाहु तआ्ला अन्हु के घर की तरफ चल रहे थे कि हज़रते सैय्यदुना उसमाने ग़नी रज़ि अल्लाहु तआ्ला अन्हु और आप सल्लल्लाहु तआ्ला अलैहि व आलिही वसल्लम के पीछे पीछे चल रहे थे. और आप सल्लल्लाहु तआ्ला अलैहि व आलिही वसल्लम के कदम जहाँ पड़ रहे थे.वो क़दम गिन रहे थे.नबी करीम सल्लल्लाहु तआ्ला अलैहि व आलिही वसल्लम ने पूँछा कि अय उसमान मेरे क़दम क्यों गिन रहे हो? हज़रते सैय्यदुना उसमाने ग़नी रज़ि अल्लाहु तआ्ला अन्हु ने अर्ज़ किया या रसूल सल्लल्लाहु तआ्ला अलैहि व आलिही वसल्लम मेरे माँ बाप आप पर कुरबान आक़ा मै चाहिता हूँ।हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ्ला अलैहि व आलिही वसल्लम की अज़मत और आपकी तौक़ीर और आपकी इज़्ज़त की खातिर आपके हर हर क़दम पर मै एक गुलाम आज़ाद करूँगा.चुनाँचे हज़रते सैय्यदुना उसमाने ग़नी रज़ि अल्लाहु तआ्ला अन्हु के घर तक जितने क़दम नबी करीम सल्लल्लाहु तआ्ला अलैहि व आलिही वसल्लम के पड़े उस क़दर आपने गुलाम आज़ाद किऐ।

गुलाम हज़रते सैय्यदुना उसमाने ग़नी रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हु ने आज़ाद किऐ।

## ***हज़रते उसमाने ग़नी रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हु के इशक़े रसूल की तीसरी झलक***

हज़रते अल्लामा साहब ज़ादा हस्सान हसीबुर रहमान मद्दा ज़िल्लहुल अली के बयान का खुलासा है।.कि हज़रते उसमाने ग़नी रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हु ने अहराम बान्धा है।मक्का आते हैं।कुफ्फार से डायलोक ( अपनी बात से लोगों को राज़ी करना )करने की खातिर ताकि हुज़ूर अलैहिस सलाम और मुसलमानों को काबा शरीफ मे आने की इजाज़त दी जाऐ उमरे की इजाज़त दी जाऐ कुफ्फार ने कहा नही हम उन्हें मक्का मे आने की इजाज़त नही देंगे.हम रसूल अल्लाह को मक्का मे आने की इजाज़त नही देंगे.अय उसमान आपने तो अहराम भी बाँधा है।हम उनको तो आने की इजाज़त नही देंगे लेकिन ये है।सामने काबा आपको कोई नही रोकेगा आप चाहो तो काबे का तवाफ करलो.और अगर काबाके बाहिर इबादत करना चाहो.अगर अंदर जाके इबादत करना चाहो.तो दरवाज़ा खुला है।अंदर इबादत करलो वो फरमाते हैं।मै कुरबान जाऊँ हज़रते उसमाने ग़नी के तवाफ पर.अरे उसमाने ग़नी से बढ़कर काबा का आशिक़ कौन होगा.उसमान पैदा हुऐ तो मक्का मे हुऐ परवरिश पाई तो काबा के साऐ मे पाई सहाबा की मुहब्बत का मरकज़ भी काबा था.सहाबा की अक़ीदत का मरकज़ भी काबा था.और सहाबा की इबादत का मरकज़ भी काबा था.लेकिन सहाबा के ईमान का मरकज़ मुसतफा थे.हज़रते उसमाने ग़नी ने कहा कि अगर हुज़ूर तवाफ नही करेंगे तो मै भी तवाफ नही करूँगा.अगर हुज़ूर काबे के अंदर नही जाऐंगे तो मै भी नही जाऊँगा.अगर मै काबे की ताज़ीम करता हूँ।तो हुज़ूर की वजह से करता हूँ।अगर हुज़ूर नही तो कुछ भी नही.तो पता चला कि सहाबा की इबादत का मरकज़ तो काबा था.लेकिन ईमान का मरकज़ हुज़ूर की ज़ात थी.और यहाँ तक कि हज़रते उसमाने ग़नी ने उस साल काबे का तवाफ नही किया बल्कि जब अगली साल मक्का जब फतह हुआ तो हुज़ूर के साथ जाकर आपने काबा का तवाफ किया.ये था आपका इशक़े रसूल.

## ***हज़रते उसमाने ग़नी रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हु के इशक़े रसूल की चौथी झलक***

अमीरुल मोमनीन हज़रते उसमाने ग़नी रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हु. ज़बर दस्त आशिक़े रसूल बल्कि इशक़े मुसतफा का अमली नमूना थे.अपने अक़वालो अफआ़ल

मे महबूबे रब्बे जुल जलाल की सुन्नतें और अदाऐं खूब खबू अपनाया करते थे.चुनाँचे एक दिन हज़रते उसमाने ग़नी रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हु ने मस्जिद के दरवाज़े पर बैठकर बकरी की दस्ती का गोशत मंगवाया और खाया.और बग़ैर ताज़ा वुजू किऐ नमाज़ अदा किऐ।फिर फरमाया कि रसूल अल्लाह ने भी इसी जगह बैठकर यही खाया था.और इसी तरह किया था.

( मुसनद इमाम अहमद बिन हम्बल जि0.1 सफा 137.हदीस 441 उर्दू )

## *हज़रते अली रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हु के इशक़े रसूल की चंद झलकियाँ*

ग़ज़वऐ खैबर से वापसी मे मंज़िले सहबा पर नबी सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने नमाज़े असिर पढ़कर मौला अली कर्रमल लाहु वजहुल करीम के ज़ानू ( रान यानी जाघ )पर सर मुबारक रखकर आराम फरमाया.मौला अली ने नमाज़े असिर ना पढ़ी थी. आँख से देख रहे थे.कि वक़्त जा रहा है।मगर इस खयाल से कि ज़ानू सरकाऊँ तो शायद ख्वाब मुबारक मे खलल आऐ।ज़ानू ना हटाया यहाँ तक कि आफताब(सूरज)डूब गया.जब चशमे अक़दस खुली मौला अली ने अपनी नमाज़ का हाल अर्ज़ किया.हुजूर ने दुआ की डूबा हुआ सूरज पलट आया मौला अली ने नमाज़ असिर अदा की.फिर सूरज डूब गया.उस से साबित हुआ कि अफज़लुल इबादात नमाज़ वो भी नमाज़ वुस्ता यानी नमाज़े असिर मौला अली ने हुजूर की नींद पर कुरबान करदी
कि इबादतें भी हमें हुजूर ही के सदक़े मे मिलीं.

( सहाबा का इशक़े रसूल सफा 32.उर्दू )

इसी तरफ इशारा करते हुऐ अअ्ला हज़रत अलैहिर रहमा फरमाते हैं।.

मौला अली ने वारी तेरी नींद पर नमाज़
और वो भी असिर सबसे जो अअ्ला खतर की है।.

गोया कि हज़रते अली से कह रहे थे इसकी तरजुमानी नीचे एक शायर ने की है।.

नमाज़ें क़ज़ा हों तो फिर से अदा हों
मुहब्बत क़ज़ा हो तो कैसे अदा हो.

## *☆ हज़रते अली रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हु के ☆ इशक़े रसूल की दूसरी झलक*

और जंगे ओहद में जबकि मुस्लमान आगे और पीछे से कुफ्फार के बीच में आगऐ जिसके सबब बहुत से लोग शहीद हुऐ तो उस वक़्त सरकारे अक़दस सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम भी काफिरों के घेरे में आगए और उन्होंने ये ऐलान कर दिया कि अय मुस्लमानो!तुम्हारे नबी कत्ल कर दिऐ गऐ हैं।उस ऐलान को सुनकर मुस्लमान बहुत परेशान हो गऐ यहा तक कि इधर उधर (तितिर बितिर) हो गऐ बलकि उनमें से बहुत लोग भाग भी गऐ  हज़रते अली कर्रमल्लाहु तआ़ला वजहुल करीम फरमाते है। कि जब काफिरों ने मुस्लमानों को आगे पीछे से घेर लिया और रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम मेरी निगाह से ओझल (ग़ायब) हो गऐ तो पहले मेने हुज़ूर को ज़िंदो में तलाश किया मगर नही पाया फिर शहीदो में तलाश किया वहाँ भी नही पाया तो मेने अपने दिल में कहा कि ऐसा  हरगिज़ नही हो सकता कि हुज़ूर मेंदाने जंग से भाग जाऐं लिहाज़ा अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूले पाक को आसमान पर उठा लिया,इसलिऐ अब बेहतर यही है।कि में भी तलवार लेकर काफिरों में घुस जाऊँ यहाँ तक कि लड़ते लड़ते शहीद हो जाऊँ फरमाते हैं। कि मेंने तलवार लेकर ऐसा सख्त हमला किया कि कुफ्फार बीच में से हटते गऐ और मेंने रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम को देख लिया तो मुझे बे इंतिहा खुशी हुई और मेने यक़ीन किया कि अल्लाह तबारको तआ़ला ने फरिशतों के ज़रिऐ अपने हबीब की हिफाज़त फरमाई में दौड़कर हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के पास जाकर खड़ा हुआ कुफ्फार गिरोह दर गिरोह (फौज़ दर फौज) हुज़ूर पर हमला करने के लिए आने लगे,आपने फरमाया अली इनको रोको तो मेंने तन्हा उनका मुक़ाबला किया और उनके मुंह फेरदिऐ और कइ एक को क़त्ल भी किया उसके बाद एक और गिरोह हुज़ूर पर हमला करने की नियत से बढ़ा आपने फिर मेरी तरफ इशारा फरमाया तो मेंने फिर उस गिरोह का अकेले मुक़ाबला किया उसके बाद हज़रते जिब्रील ने आकर हुज़ूर से मेरी बहाद्दरी और मदद की तारीफ की तो आपने फरमाया इन्नहु मिन्नी व अना मिन्हु यानी बेशक अली मझसे हैं। और में अली से हूँ।मतलब ये है। कि अली को मुझसे कमाले कुर्ब हासिल है। नबी करीम अलैहिस सलातु व अफज़लुत तस्लीम के उस फरमान को सुनकर हज़रते जिब्रील ने अर्ज़ किया व अना मिन कुमा यानी में तुम दोनो से हूँ।. ( खुतबाते मुहर्रम.स.189 उर्दू )

### ☆ हज़रते अली रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हु के ☆ इशक़े रसूल की तीसरी झलक

सुलह हुदैबिया के मौक़े पर जब हज़रते अली रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हु सुलह नामा लिख रहे थे तो उस वक़्त काफिरों को उसमे मुहम्मद रसूल अल्लाह लिखने पर

ऐतराज़ हो गया.तो काफिरों ने कहा कि आप इसमे से मुहम्मद रसूल अल्लाह मिटादें और उसकी जगह मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह लिखें तो हुजूर ने हज़रते अली से फरमाया कि अय अली मुहम्मद लिखा रहने दो रसूल अल्लाह मिटादो तो हज़रते अली रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हु ने अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह!मेरे माँ बाप आप पर कुरबान अली से दर किनार है।अली की नस्ल भी आप का लिखा नाम मिटा नही सकती. अल्लामा इक़बाल इधर बोल पड़े

जमाले इशक़ो मस्ती नैनवाज़ी जलाले इशको मस्ती बे नियाज़ी
कमाले इशक़ो मस्ती ज़र्फे हैदर ज़वाले इशको मस्ती हर्फे राज़ी

### ✯ हज़रते अली रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हु के ✯ इशक़े रसूल की चौथी झलक

ग़ज़्वऐ तबूक़ के मौक़े पर जब नबी अलैहिस्सलाम जब सहाबा इकराम को लेकर जा रहे थे जिहाद के लिऐ तो हज़रते अली रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हु को आपने मदीनऐ मुनव्वरा मे छोड़ दिया और कहा कि आप मदीनऐ मुनव्वरा मे रहें और हम लोग जा रहे हैं।हज़रते अली चूँकि सरकार की ( मुहब्बत )मे सरकार का साथ चाहिते थे और ये ग़ज़्वऐ तुबूक़ हालाकि ग़ज्वऐ तुबूक़ बड़ी मुशिकल का ग़ज्वा था इसमे गरमी भी थी तंगी भी थी और इसी ग़ज़्वे मे बहुत सारे मुनाफिक़ीन सामने आ गऐ।इसमे पता चल गया कि वो साथ हैं।कि नही लेकिन वो जाने की तमन्ना मे हैं।कि मुझे चलना है।वो नबी अलैहिस सलाम से अफसोस के साथ कहने लगे कि या रसूल अल्लाह कि मुसलमान जा रहे हैं।और मै आपके बग़ैर मदीनऐ मुनव्वरा मे रहूँगा.तो आपने इरशाद फरमाया कि अय अली क्या तुम इस बात पर राज़ी नही कि तुम मेरे लिऐ हज़रते मूसा और हज़रते हारून मक़ाम था उस मक़ाम पे हो.जिस तरह हज़रते मूसा अलैहिस सलाम ने कोहे तूर पर जाते हुऐ।हज़रते हारून अलैहिस सलाम को अपना खलीफा और अपना नायब बनाया था.मदीनऐ मुनव्वरा मे आपको खलीफा बनाता हूँ।और हुजूर का हज़रते अली से इशक़ और आपको वो फज़ीलत दे रहे हैं।जो हज़रते मुसा अलैहिस सलाम को हज़रते हारून अलैहिस सलाम से थी.और यहाँ से हज़रते अली का हुजूर से इशक़ का पता चलता है।.

### ✯ सहाबए इकराम रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हुम के ✯ इशक़े रसूल की अनोखी झलक

हज़रत अल्लामा मौलाना सैय्यद मुहम्मद अशरफ मद्दा ज़िल्लहुल अली के बयान

का खुलासा है।नबी सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम हैं।वुज़ू फरमा रहे हैं।और सहाबा परवानों की मानिन्द चारों तरफ खड़े हैं।नबी सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने पानी लिया दस्ते रहमत धोया पानी के क़तरे नबी सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के जिस्मे पाक से जुदा हुऐ।वो क़तरे ज़मीन की तरफ आना ही चाहते थे कि एक सहाबी ने दोनों हाँथों को बढ़ाया पानी के हर हर क़तरे को अपने चुल्लुओं मे ले लिया.और पी लिया.फिर नबी सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने दस्ते करम धोया.फिर क़तरे ज़मीन की तरफ जाना ही चाहते थे.कि दूसरे सहाबी ने अपने दोनों हाँथों को बढ़ाया.हर बूँद को हथेलियों मे लिया और लेकर उसको चहरे पर मला.नबी सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम वुज़ू फरमाते जा रहे हैं।और सहाबा पानी के हर हर क़तरे को लेकर कोई पी रहा है।तो कोई सरों पर डाल रहा है।कोई सीने पर मल रहा है।कोई आँखों से लगा रहा है।ये ज़मीन तमन्नाई नज़रों से सहाबा को देख रही है।अरे अय सहाबा की मुक़द्दस जमाअ़त थोड़ा पानी तो मुझ तक पहुँच जाने दीजिऐ।खुदा की क़सम नबी सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के जिस्मे अक़दस से लगा हुआ एक क़तरा पानी अगर हमे भी मिल गया तो हमेशा के लिऐ खिज़ा रसीदगी दूर हो जाऐगी.लेकिन सहाबा का इशक़ है।कि नबी सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के जिस्मे अतहर के एक क़तरे पानी को ज़मीन पर नही जाने देते.कोई ले रहा है।तो कोई पी रहा है।और कोई आखों से लगाता है।तो कोई सीने पर लगा रहा है।अब ज़रा पूँछ कि सहाबा की मुक़द्दस जमाअ़त नबी सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के जिस्मे अतहर के टपकते पानी को पिया तो कोई सरों पर डाला कोई सीने पर मला और आँखों से लगाया.ऐसा करना कहाँ लिखा था.ये आपने किया ऐसा ख्याल आपको आया कहाँ से.ना तो यही खयाल आऐगा.अरे ज़ालिम सुन सुन कहाँ लिखा है।अरे ये नबी के इशक़ की बात है।ये किसी किताब मे नही ये तो आशिक़ों के दिलों मे हुआ करती है।.

### ☆ सहाबए इकराम रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हुम के ☆
### इशक़े रसूल की अनोखी दासतान
### इशक़े रसूल और माँ बाप से मुहब्बत

हज़रत अल्लामा मुफ्ती मुहम्मद अकमल मद्दा ज़िल्लहुल आली के बयान का खुलासा है।हमारे यहाँ ये भी एक मआ़मला है।गुस्तखाने रसूल से राब्ता है। कहते हैं।यार ये देखो सरकार की गुस्ताखी करता है।शान मे इस तरह बाते करता है।क्या

करें वो साहब बिरादरी है।ना?खानदान है।ना रिशतेदारी भी तो निभाने पड़ती है।दोस्ती भी तो निभाने पड़ती है।ला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाहि मै आपसे एक कुस्चन करता हूँ।बताइऐ सहाबए इकराम अलैहिमुर रिज़वान से बढ़कर कोई आशिक़े रसूल पूरी दुनिया मे पैदा हुआ है।और क्या क़यामत तक होगा.उन्होंने इस इम्तिहान मे पूरा उतरकर दिखाया है।जब मेरे आक़ा सल्लल्लाहु तआ्ला अलैहि वसल्लम ने फरमाया कलमा पढ़ो और तुम्हारे वो आबाओ अजदात जिन्होंने तुम्हें ग़लत अक़ाएद की तअ्लीम दी है।मानों कि वो जहन्नमी हैं।मानो कि उनके अक़ायद ग़लत हैं।सहाबा इकराम ने एक लम्हें के लिऐ ये नही सोचा कि या रसूल अल्लाह वो कैसे ग़लत हो सकते हैं।वो कैसे जहन्नमी हो सकते हैं।हम कैसे अपनी बिरादरी और खानदान की मुखालिफत मोल लें.उन्होंने कहा लब्बैक या रसूल अल्लाह!फिदा का उम्मी अबी व आप पर मेरे बाप कुरबान और आप पर मेरी माँ कुरबान बिरादरी छूटती है।छूटे लोग नाराज़ होते हैं।नाराज़ हों.लेकिन सरकार से मुहब्बत का तअ्ल्लुक़ खत्म नही होगा.जब मेरे आक़ा सल्लल्लाहु तआ्ला अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि हिजरत करो.छोड़ दो वो मक्का जहाँ तुम्हारा बचपन गुज़रा है।जहाँ तुम पैदा हुऐ हो.जहाँ तुम्हारा खानदान है।बिरादरी है।बीवी बच्चे हैं।बाग़ात हैं।मवेशी (चार पैर वाले जानवर जैसे गाय. भैंस. बकरी घोड़े. ऊँट वगैरह )हैं।ठन्डे मीठे पानी के चशमे हैं।तुम्हारा बिजनिस है।सहाबए इकराम ने ये नही पूँछा या रसूल अल्लाह! सल्लल्लाहु तआ्ला अलैहि वसल्लम आगे चलकर क्या होगा?हम खानदान को छोड़ दें बिरादरी को छोड़ दें.अकेले हो जाऐ नहीं उन्हें मअ्लूम था कि दामने मुस्तफा से वाबस्ता होंगे तो पूरी काएनात क़दमों मे होगी.और ये दामन छोड़कर सबसे वाबस्ता हो जाऐंगे तो अल्लाह तआ्ला सब नेअ्मतें सब रहमते हमसे दूर फरमा देगा.और कुछ भी हाँथ मे नही रहेगा.छोड़ कर इस तरफ आ गऐ ग़ज़्बऐ बदर है।सहाबए इकराम एक तरफ खड़े हैं।अंसार ( मदीने के रहने वाले )सहाबा थे उन्हें एक लम्हें के लिऐ।हटालें मुहाजिर ( जो मक्के से चलकर मदीने आऐ ) सहाबा मौजूद थे.ना मक्के से हिजरत करने वाले और सामने जो लशकरे जर्रार एक हज़ार का तक़रीबन ये इनके खानदान और बिरादरी वाले ही थे.तलवारें निकली हुई हैं।सामने बाप है।चाचा है।मामू है।ताया है।बहनोई है।लेकिन इस तरफ मेरे नबी सल्लल्लाहु तआ्ला अलैहि वसल्लम हैं।इस तरफ ईमान है।इस तरफ इस्लाम है।इस तरफ ईमान का इम्तिहान है।सहाबा इकराम अलैहिमुर रिज़वान के पाँव मे लग़ज़िश पैदा नही हुई है।हाँथ नही काँपे हैं।अगर बाप पे हाँथ उठा है।तो बाप की गरदन उड़ाई है।चाचा पे

हम्ला किया है।तो चाचा की गरदन उड़ादी है।अगर मुहब्बत है।तो सिर्फ सरकार सल्लल्लाहु तआ्ला अलैहि वसल्लम के दामन की वाबस्तगी की वजह से है।वरना ना कोई हमारा बाप है।और ना कोई हमारी माँ है।हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु तआ्ला अन्हु के साहब ज़ादे हज़रते अब्दुर रहमान बिन अबी बकर कहते हैं।इस्लाम लाने के बाद ग़ज़्वऐ बदर मे कुफ्फार की तरफ से आऐ थे.अब्बा जान कई मरतबा ऐसा हुआ की आप मेरी तलवार के सामने आऐ लेकिन सिर्फ इस लिऐ तलवार रोक ली कि आप मेर वालिद हैं।सिद्दीक़े अकबर रज़ि अल्लाहु तआ्ला अन्हु ने ये नही फरमाया कि बहुत बहुत शुक्रिया बेटा बल्कि इरशाद फरमाया कि खुदा की क़सम अगर तू मेरी तलवार के सामने एक मरतबा भी आता तो तेरी गरदन उड़ाने मे देर ना करता.इस लिऐ कि ये इम्तिहान है।इस्लाम का उनके अंदर ईमान था. ईमान की रूह निकली हुई एक लाश ना थी. कहा कि अगर तुम मेरे सामने आ जाते तो मै तुम्हारी गरदन उड़ा देता ग़ज़्वऐ ओहद मे जब बहुत सारे मुसलमान शहीद हुऐ।हैं।तो जब लाशें लाई गईं तो औरते आई एक खातून आगे बढ़ी किसी ने कहा किसी ने कहा आपके वालिद की लाश है।कहा कि ठीक है।लेकिन ये बताओ कि मेरे सरकार कैसे हैं।किसी ने कहा कि ये आपके शोहर की लाश है।कहा कि ठीक है।लेकिन ये बताओ मेरे सरकार कैसे हैं।किसी ने एक लाश रखी सामने किसी ने कहा आपके भाई की लाश है।कहा कि ठीक है।लेकिन ये बताओ कि मेरे सरकार कैसे हैं।किसी ने कहा आपके बेटे की लाश सामने रखी कहा कि ठीक है।लेकिन ये बताओ मेरे सरकार कैसे हैं।कहा कि खैरियत से हैं।वहाँ बैठे हैं।फौरन वहाँ पहुँचीं सरकार को देखा आँखें छलक गईं.सरकार का दामने रहमत थामा और अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह जब आप सलामत हैं।तो खुदा की क़सम मुझपर तमाम मुसीबतें आसान हैं।ये है।मुहब्बत हाला कि भाई वग़ैरह सब मोमिन ही थे ना.लेकिन सरकार पर उनको फोक़ियत यहाँ मोमिनों पर सरकार की मुहब्बत को फोक़ियत उनकी तरफ तवज्जोह नही उनका ग़म नही सरकार के सलामत रहने की खुशी है।.मज़हब हो एक गुस्ताखे रसूल हो.अरे नबी की शान मे गुस्ताखी करने वाला हो लेकिन हम प्यार से हाँथ मिलाऐं कि ये दोस्ती है।क्या करें मामू हैं।बहनोई है।ताया है।फुप्पा है।रिशता सरकार का है।याद रखिऐ क़बर मे जाऐंगे मामा साथ नही होगा.चाचा साथ नही होगा ये दोस्त साथ नही होंगे.मेरे आक़ा खड़े होंगे.फरिशते कहेंगे मा कुन्तो तकूलो फी हक़्क़े हाज़र रजुल तू इस शख्स के बारे मे किया कहता था.अगर सरकार के

तरीक़े पर चले होंगे.सरकार से मुहब्बत रखने वालों से राबता रखा होगा.गुस्तखाने रसूल और बद मज़हबों से दूर होंगे.तो इन्शा अल्लाह ज़ुबान से निकलेगा फरिशतों मै बताऊँ कि ये कौन हैं।या मेरे सरकार बताऐं कि मै कौन हूँ।पूँछो मेरे सरकार से हर उस चीज़ का मुक़ाबला किया है।अपने आक़ा के लिऐ सब कुछ छोड़ दिया आक़ा का दामन थामा अल्लाह ने पूरी काएनात पूरी दुनिया की दौलत मेरे क़दमों मे डाली मेरे सरकार से पूँछो और फिर मैदाने महशर मे जब सरकार की बारगाह मे शफाअ्त का सुवाल करने के लिऐ जाऐंगे तो नदामत और शरमिंदगी नही होगी.निगाहें झुकी नही होंगी.वहाँ पर इंसान को अपनी साबिक़ा ज़िन्दगी पर ज़िल्लतो रुसवाई का अहसास नही होगा फखर से सरकार का दामन थामेंगे.और जो यहाँ सरकार के दुशमनों के साथ राब्ता रखता होगा.और वो दुशमन एक लाईन मे मुजरिमीन की हैसियत से शरमिंदगी के साथ सर झुकाके खड़े होंगे.और अल्लाह ना करे अगर अल्लाह ने उनके साथ हमे भी खड़ा कर दिया तो फिर किस मुंह से सरकार की बारगाह मे हाज़िर होंगे.

## हज़्रते सअ्द रज़ि अल्लाहु तआ्ला अन्हु का इशक़े रसूल

हज़रत मौलाना खादिम हुसैन रिज़वी मद्दा ज़िल्लहुल अली के बयान का खुलासा है।हज़रते सअ्द बिन मुअ्ज़ की रग कट गई सहाबा इकराम मस्जिदे नबवी के करीब खैमा लगा देते हुजूर ने फरमाया कि खैमा इधर लाओ हुज़ूर हर नमाज़ के बाद पूँछते कि सअ्द क्या हाल है।अअ्ला हज़रत फरमाते हैं।कि हज़रते सअ्द ने कहा कि रबका शुक्र है।कि रग ककटी मुसतफा बार बार पूँछते हैं।कि सअ्द क्या हाल है।पहले महीने के बाद पूँछते थे कि सअ्द क्या हाल है।मगर अब हर नमाज़ के बाद पूँछते हैं।कि अय सअ्द क्या हाल है।?

जान है।इशक़े मुसतफा रोज़ फुज़ू करे खुदा
जिसको हो दर्द का मज़ा वो नाज़े दवा उठाऐ क्यों

हज़रते सअ्द की 33/साल उम्र है।जिस दिन आपने इस्लाम कुबूल किया उस दिन आपका पूरा क़बीला क़बीला बदू अशहल पूरा क़बीला मुसलमान हो गया.उन्होंने कहा कि जब सअ्द मुसलमान हो गया तो हम अकेले रह कर क्या करेंगे.आप अपने क़बीले के इतने पाक बाज़ मुसलमान थे.एक बच्चा भी नही बचा जो मुसलमान ना हुआ हो.जब उसने सुना तो फौरन तमाम क़बीला मुसलमान हो गया.पिछले साल अपने भाई जो मैदान मे शहीद हुऐ थे.उमैर बिन मुआ्ज़ मदीने पाक से घोड़े की लगाम हुज़ूरे पाक की पकड़कर मैदाने ओहद तक ले गऐ।फिर वापसी तक घोड़े की लगाम पकड़कर

हुज़ूर को घर तक लाऐ।कि रस्ते मे हज़रते सअ्द की माँ आईं मैदाने ओहद मे जब पता चला कि हुज़ूर पर हम्ला हो गया हज़रते सअ्द हुज़ूर के घोड़े की लगाम पकड़कर मदीने पाक मे ला रहे थे.हुज़ूर ने फरमाया कि ये औरत कौन आ रही हैं।?अर्ज़ की थी की हुज़ूर मेरी माँ आ रही हैं।हुज़ूर ने फरमाया कि घोड़ा रोको मै तअ्ज़ियत करूँ उनका बेटा जो मैदाने ओहद मे शहीद हो गया जब वो क़रीब आई रसूल अल्लाह के तो हुज़ूर ने तअ्ज़ियत करना चाही तो उन्होंने हाँथ जोड़कर कहा कि हुज़ूर मे बेटे के लिऐ।नही आई मुझे तो पता चला कि आप पर हम्ला हो गया आप सलामत हैं।तो ऐसे लाखों बेटे आप पर कुरबान बताना नही पड़ता कि मै आशिक़े रसूल हूँ।इशक़ खुद बोलकर बताता है।कि यहाँ इशक़ मौजूद है।.मिटे नामियों के निशाँ कैसे कैसे और ज़मीं खा गई आसमाँ कैसे कैसे क़ब्र पे कोई पूँछने वाला नही होता शमअ् भी जलाओ तो उजाला नही होता इश्क़ मे बोलना नही पड़ता कि ये आशिक़े रसूल है।अब सअ्द बिन मुआ्ज़ की माँ को किसी ने पढ़ा के नही भेजा था.हज़रते उम्मे आमिर रज़ि अल्लाहु तआ्ला अन्हा आईं मैदाने ओहद की तरफ सहाबा ने कहा कि तुम्हारे अब्बा जी शहीद हो गऐ तो आप कहने लगी की अब्बा को छोड़ो हुज़ूर की बात करो.इक़बाल कहते हैं।

मा पुरसज़ बाज़ नैरंगिऐ इशक़ बहर रंगी कि ख्वाही सर बरारद

इशक़ के बारे मे मत पूँछ और आशिक़ों के बारे मे मत पूँछ जिसे तू चाहे हुज़ूर का आशिक़ उस से भी बढ़कर नज़र आऐगा फरमाया कि हुज़ूर तो ठीक हैं।फिर आगे आई सहाबा मिले उन्होंने कहा कि हुज़ूर का क्या हाल है।?कहा हुज़ूर तो ठीक हैं।मगर आपके शौहर शहीद हो गऐ।फरमाया कि शौहर का मैने नही पूँछा हुज़ूर की बात करो.आप और आगे आई सहाबा से पूँछा हुज़ूर का क्या हाल है।सहाबा ने कहा हुज़ूर तो ठीक हैं।मगर तुम्हारा बेटा भी शहीद हो गया फरमाया कि मैने बेटे का नही पूँछा कहा हुज़ूर तो सहाबा कहने लगे हुज़ूर तो ठीक हैं।फिर आगे आई कहने लगी कि हुज़ूर मुझे रास्ते ही मे पता चल गया कि मेरे चारो रिशते चले गऐ लेकिन ला उबाली मिन अमरिद दुनिया हुज़ूर ये तो मामूली बात है।आप सलामत हैं।तो दुनिया की बड़ी बड़ी मुसीबतें भी मेरा कुछ नही बिगाड़ सकतीं

## ***हज़रते हबीब बिन ज़ैद रज़ि अल्लाहु तआ्ला अन्हु का इशक़े रसूल***

हज़रत पीर अजमल रज़ा क़ादरी मद्दा ज़िल्लहुल अली अपने बयान मे फरमाते हैं।मुसैलमा ने नबीऐ पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को खत लिखा.कहने लगा

कि आप मेरे साथ मुआहिदा करलें कि जब तक आप हयाते ज़ाहिरी मे तो आप नबी हैं।और जब आपका विसाल हो जाऐ तो मै नबी या ये मुआहिदा करले कि आधे अरब के आप नबी और आधे का मै नबी.माज़ अल्लाह नबीऐ पाक ने खत लिखा फरमाया कि मै तो अल्लाह का रसूल हूँ।और तू कज़्ज़ाब (झूटा)है।जब हुज़ूर ने लिखा कज़्ज़ाब लिखा खत मे कौन लेकर जाऐगा.उसके दरबार मे जाना सिपाही बड़े खतरनाक हैं।उसके गिर्द बंदे भी हैं।और उसके घर जाना है।मुशिकल मरहला है।एक सहाबी थे झाबड़ी फरोश सर के ऊपर टोकरा रखकर खजूरें बेचा करते थे.गियारह बारह बच्चों के बाप थे.कहा कौन जाऐगा और जिसमानी तौर पर भी कमज़ोर थे हाँथ खड़ा करके कहा कि हुज़ूर किसी और की डिऊटी ना लगाना मै जाऊँगा खत लेके जब ये लफ्ज़ कहे तो उनके मुंह से कुछ खजूर के टुकड़े गिरे सहाबा के चहरों पर एक सहाबी कहने लगे कि पहले खजूर तो खालें इतनी जलदी है।बोलने की.खातो लें कहने लगे कि मेरे खाते खाते कही डिवटी किसी और की लग गई तो क्या करूँगा. जल्दी है।मुझे हुज़ूर सैय्यदे आलम ने अपना नेज़ा दिया और घोड़ा दिया और कहा कि ज़रा डटके जाना .उसके घर जाना है।कहा महबूब आप फिक्र ना करें सहाबा कहते हैं।कि वो इस तरह निकला जैसे कोई जरनैल निकलता है।उसका अंदाज़ ही बदल गया उसके तौर तरीक़े ही बदल गऐ।यूँ निकले जैसे कोई दिलैर आदमी निकलता है।हुज़ूर ने भेजा है।नबीऐ पाक ने भेजा है।मुसेलमा के दरबार मे गऐ।वहाँ एक शख्स था जो बाद मे मुसलमान हुआ वो कहता है।कि जब हबीब बिन ज़ैद पहुँचे तो नैज़ा उनके हाँथे मे था.ज़ोर से गाड़ा उसके दरबार मे मुसेलमा ने कहा कौन आप फरमाने लगे कि तूने चहरा देखकर नही पहचाना कि मै नबी का गुलाम हमारे तो चहरे बताते हैं।कि हम रसूल अल्लाह के गुलाम है।पूँछा कैसे आऐ। हो फरमाने लगे कि तुम्हारे खत का जवाब लाया हूँ।बादशाहों का तरीक़ा ये था कि खत खुद नही पढ़ते थे.बल्कि उनके बगल से एक बंदा रहता था जो खत पढ़ा करता था.मुसैलमा ने उस से कहा कि पढ़ो जब उसने खत पढ़ा तो उसमे लिखा हुआ था कि तू कज़्ज़ाब है।अब सबने सुन लिया अकेले मे होता तो बात कुछ और थी.सुन लिया सबने आग बगोला हो गया आँखे सुर्ख हो गईं जलाल बरसाने लगा.अब और तो कुछ ना हुआ सामने हज़रते हबीब बिन ज़ैद खड़े थे.उठा तलवार लेके कहने लगा कि तेरे नबी ने मुझे कज़्ज़ाब कहा है।तेरा किया खयाल है।कहने लगे ख्याल वाली बात ही कोई नही जिसे नबीऐ पाक कज़्ज़ाब कहें वो होता ही कज़्ज़ाब है।जिसे हुज़र झूँटा कहें वो होता

ही झूँटा है ।फरमाया कि तू सात समंदरों का पानी भी बहा दे तो तेरा झूँट धुल सकता ही नही जिसे हुज़ूर ने झूँटा कह दिया वो झूँटा है ।कहने लगा कि पलटके देख सारे मेरे पहरेदार मेरे सिपाही हैं ।तलवारे नेज़े खंजर तीर सारे मेरे मान ने वाले हैं ।क्या लफ्ज़ हैं ।क्या हुस्न क्या तवानाई है ।हज़रते हबीब बिन ज़ैद फरमाने लगे कि मेरे भी बारह बच्चे हैं ।उन मेसे कुछ ऐसे हैं ।जो दूध पीते हैं ।कुछ ऐसे हैं ।जो अभी चल नही पाऐ ।मै जब रसूल अल्लाह का पैग़ाम लेकर निकला था.तो मैने जब पलटकर अपने बच्चे ना देखे तो तेरे पहरेदार कैसे देखलूँ जो चीज मजबूर करती है ।बाँध लेती है ।वो जब मैने नही देखी तो मै तेरे पहरेदार कैसे देखलूँ जो जी मे आता है ।कर.

गुलामाने मुहम्मद जान देने से नही डरते
ये सर कट जाऐ या रह जाऐ कोई परवाह नही करते

फरमाया उनको नही देखा जिन्हें देखना चाहिऐ था तुझे देखूँ हाँथ मे कट लग जाऐ तो नमाज़े रह जाती हैं ।जमाअ्ते छूट जाती है ।मुशिकल होता है ।तकलीफ आऐ तो संभलना यहाँ हल्का सा बिच्छू आके काटे तो शोर हो जाऐगा जुमे मे लोग उठेंगे हालाँकि मजमा बिखर जाऐगा छिपकली पैरों पे गिरे तो लोग उठ दौड़ते हैं ।हज़रते हबीब बिन ज़ैद अंसारी खड़े थे उंगली नही हाँथ मे कट नही लगा मुसैलमा उठा उसने ज़ोर से तलवार मारी बाज़ू कटके गिर गया फुव्वारा निकला खून का तो भाई बिच्छू काटे तो संभलना मुशिकल होता है ।ज़रा तसव्वुर करो हाँथ कट गया हज़रते हबीब बिन ज़ैद खड़े होकर कहने लगे कि अब तेरा क्या खयाल है ।?आप फरमाने लगे कि तू बड़ा बे वक़ूफ है ।हमे अज़माता है ।हमे तो बदर से लेकर ओहद तक सारी दुनिया आज़मा चूकी है ।अभी भी खयाल पूँछता है ।फरमाया कि मेरा ख्याल वही जो मेरे रसूल ने फरमा दिया है ।ख्याल वही है ।जो नबीऐ पाक ने कहदिया है ।फिर तलवार मारी दूसरा हाँथ भी कट गया ज़रा सोचना ग़ौर करना टाँग टूटी नही हड्डी नही टूटी मास नही उखड़ा हाँथ कट के गिरा दो हाँथ कट के ज़मीन पर गिरे हज़रते हबीब बिन ज़ैद से फिर कहने लगा मै तुझे क़त्ल कर दूँगा बाज़ आजा आप फरमाने लगे तू बड़ा नादान है ।उन लोगो को डराता है ।जो सुब्ह फजिर पढ़के पहली दुआ शहादत की माँगते हैं ।हमे डराता हम सोते वक़्त ये इलितजा करते हैं ।कि या अल्लाह तू बिस्तर पे मौत ना देता मैदान मे देना तू हमे डरा रहा है ।चल तुझ से जो होता है ।वो करले उसने गरदन पे तलवार रख्खी कहने लगा मै काट दूँगा आपने फरमाया तू काटता क्यों नही है ।और वो रिवायत करने वाले कहते हैं ।कि मुसैलमा के हाँथ काँपते थे.खत्मे

नबूव्वत के तहफ्फुज़ के लिऐ जब नबीऐ पाक के गुलाम निकले तो झूँटा दअ्वे करने वाले काँप उठते वो कहते हैं।कि उसके हाँथ काँपते थे.तो हज़रते हबीब बिन ज़ैद कटे हुऐ बाजुओ के साथ तवाना थे जब तलवार चली गरदन कटी तो रसूल अल्लाह के खत्मे नबूव्वत पे पहरा देने वालों का अज्र मेरे रसूल ने बयान फरमाया और जन्नत की सनद दी हुज़ूर ने वहाँ गरदन कटी यहाँ मदीने में हुज़ूर की आँखों मे आँसू आऐ सहाबा ने अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह क्या हुआ फरमाया मेरा हबीब बिन ज़ैद शहीद हो गया है।और रब करीम ने उसके लिऐ जन्नत के सारे दरवाज़े खोल दिऐ हैं।.

### ***हज़रते अबू उबादह रज़ि अल्लाहु तआ्ला अन्हु का इशक़े रसूल***

हज़रते अबू उबादह रज़ि अल्लाहु तआ्ला अन्हु ने मैदान के अंदर अपने बाप को क़त्ल किया हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ्ला अलैहि वसल्लम ने कहा कि अय अबू उबादह!तूने अपने बाप को मार दिया तो आपने अर्ज़ की या रसूल अल्लाह! बाप नही चाहिऐ रसूल अल्लाह का वफा दार चाहिऐ।

वो कोई और होगा अपना जो ईमान दे देगा
नबी का चाहने वाला नबी पे जान दे देगा.

### ***हज़रते सैय्यदुना शम्मास बिन यूसुफ रज़ि अल्लाहु तआ्ला अन्हु का इशक़े रसूल***

अल्लामा सैय्यद शबाहत हुसैन मद्दा ज़िल्लाहुल आली के ब्यान का खुलासा है।मिशकात शरीफ की एक रिवायत मे है।कि जंगे औहद हो रही है।हुज़ूर के ऊपर एक शहीद होने वाले हज़रते सैय्यदुना शम्मास बिन यूसुफ रज़ि अल्लाहु तआ्ला अन्हु हैं।ये हुज़ूर के बोडी गार्ड यानी हिफाज़ती दस्ते मे थे.जब ये शहीद हो गऐ तो हुज़ूर से अर्ज़ की गई कि हुज़ूर इनकी नमाज़े जनाज़ा आप पढ़ादें आपने फरमाया इसकी नमाज़ नही पढ़ाऊँगा कहा हुज़ूर कोई गल्ती कहा ग़ल्ती नही मेरा रब इस से बहुत राज़ी हो गया और सहाबी की नमाज़ इस वजेह से पढ़ाई जाती है।कि उसका दर्जा बुलन्द हो जाऐ उसकी बख्शिस के लिऐ नही हुज़ूर ने फरमाया कि तुमने देखा नही कि उसने मुझपर जान कैसे दी ?फरमाया कि इसने जान मुझपर ऐसे दी कि जब एक तीर मेरी तरफ आया और इसने जब ये नज़ारा देखा एक ज़ालिम ने मारा जब इसने उस तीर को आते देखा कि तीर मेरी तरफ आ रहा है।तो दौड़ता हुआ मेरी तरफ आया तो इसने ये नही सोचा कि मै तीर रोकूँगा तो ये तीर

मेरे कहाँ लगेगा.हुजूर फरमाते हैं।कि ये मेरे बिलकुल सामने आकर खड़ा हो गया तीर आकर इसकी आँख मे लगा और जब तीर इसकी आँख मे लगा तो इसने`आ हा और हाए तौबा नही की.बल्कि इसने पलटके मुझे देखा तीर इसकी आँख मे लगा हुआ था तीर इसकी आँख मे लगा था उसमे से खून निकल रहा था एक ज़रा सा कीड़ा आँख मे पड़ जाता है।तड़प जाते हैं।मगर वो कैसा ईमान होगा पलटके हुजूर से अर्ज़ करते हैं।कि मेरे आक़ा मुझे मुआ़फ कर दीजिऐ की इस तीर की वजह से आपकी तरफ पीठ हो गई है।अल्लाहु अकबर!सरकार फरमाते हैं।कि जब ये शहीद हुआ है।तो मेरे रबने जिबराईल को भेजा और फरमाया कि अय मेहबूब उसकी नमाज़ ना पढ़ाऐं क्यों कि आपके रबने अभी तक रख्खा नही है।जो इस आपके गुलाम को दे नही दिया हो. एक शायर ने कितना प्यारा शेर कहा है।...

गुलामाने मुहम्मद जान देने से नही डरते
सर कट जाऐ या रह जाऐ कोई परवाह नही करते

***हज़रते सैय्यदुना ज़ियाद रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हु का इशके़ रसूल***

अल्लामा पीर साक़िब शामी मद्दा ज़िल्लाहुल आली के ब्यान का खुलासा है।कहा ये कैसी प्यास है।कहा ये इशक़ की प्यास है।अगर इसे तमाम दरियाओं का पानी भी पिलादो तो इसकी प्यिास नही बुझेगी कहा फिर ये कैसी पियास है।कहा ये दीदारे मुसतफा से ही बुझेगी हज़रते सैय्यदुना ज़ियाद रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हु ग़ज़वऐ औहद मे हैं।ज़ख्मों से चूर चूर हैं।बड़ी तकलीफ मे हैं।बड़ी मुसीबत मे हैं।बहुत दर्द मेहसूस कर रहे हैं।इस क़दर शदीद दर्द है।कि उनकी आवाज़ दूर दूर तक पहुँ रही है।अचानक उम्मुल मोमनीन हज़रते आईशह रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हा हज़रते सैय्यदुना ज़ियाद रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हु को देखती हैं।क़रीब आती हैं।और कहती हैं।अरे ये तो आशिके़ रसूल हैं।ये तो हुजूर के आशिक़ हैं।देखती हैं।कि ये तो आखिरी साँसे ले रहे हैं।फौरन पानी पिलाती हैं।हज़रते सैय्यदुना ज़ियाद रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हु की प्यिास पानी से कैसे बुझ सकती है।वो तो आशिके़ मुसतफ हैं।वो कहते हैं।अय आईशह!अब मेरी एक ही तमन्ना है।अय उम्मुल मोमनीन अब मेरी एक ही आरजू है।मेरी एक ही ख्वाहिश है।काश कोई मेरे आक़ा को बुलाकर ले आऐ पैग़ाम देदे.गुलाम दुनिया से जा रहा है।एक तमन्ना

एक आरजू और एक ख्वाहिश कुछ नही माँगता कोई दनिया का पानी मेरी प्यिास नही बुझा सकता दुनिया के दरिया मेरी पियास नही बुझा सकते कोई जाऐ आक़ा को बुलाकर ले आऐ ये सुनकर हज़रते आईशा फौरन सरकार की बारगाह मे हाज़िर होती है।आक़ा देखिऐ और कहती हैं।कि या रसूल अल्लाह!एक आशिक़ आपका इन्तिज़ार कर रहा है।और वो दुनिया से जा रहा है।और आपको पुकार रहा है।ये सुनकर कौनैन के वाली फौरन अपने आशिक़ के सिरहाने आते हैं।आशिक़ इन्तिज़ार कर रहा है।इन्तिज़ार मे हज़रते ज़ियाद की आखें बंद हो जाती हैं।अभी आँखें बंद हो चुकी हैं।आक़ा हज़रते ज़ियाद के सिरहाने तशरीफ ले आते हैं।और फरमाते हैं।कि देख अय ज़ियाद तेरा मेहबूब आ गया है।गोया कि हज़रते ज़ियाद की जाती हुई रूह अपने मेहबूब की आवाज़ सुनके फैरन लौट आती है।आँखें खोलते हैं।आक़ा का दीदार करते हैं।और अर्ज़ करते हैं।या रसूल अल्लाह!आक़ा आपकी क़दम बोसी करना चाहिता हूँ।बड़ी तकलीफ होती है।जिस्म को घसीट के आक़ा के क़दमों मे गिर जाते हैं।रदैतो बिल्लाहे रब्बन वबिल इस्लामे दीनन वबि मुहम्मदिन नबियन आक़ा फरमाते हैं।अय ज़ियाद कोई आखिरी तमन्ना कोई आखिरी आरजू तो हज़रते ज़ियाद अर्ज़ करते हैं।कि आक़ा एक ही तमन्ना एक ही आरजू अब यही जुम्ले मुकम्मल नही हो पाते हैं।कि ज़बान की हरकत बंद हो जाती है।कुछ मज़ीद नही कह पाते आक़ा के क़दमों मे गिर जाते हैं।फिर गिरते हुऐ कुछ हिम्मत जमा करते हैं।एक जुम्ला जो जुबान से निकलता है।क़यामत तक आने वाले आशिक़ों के लिऐ।मेअयारे मुहब्बत बन जाता है।वो जुमला क्या है।हज़रते ज़ियाद कहते हैं।फज़तू बि रब्बिल काबा फुज़तू बि रब्बिल काबा अरे लोगो तुम समझते हो कि दौलत हासिल करली तो कामयाबी मिल गई तुम समझते हो कि इज़्जत मिल गई तो कामयाबी मिल गई तुम समझते हो कि नाम मिल गया. कामयाबी मिल गई उस दीवाने ने कहा उस दीवाने ने कहा सहाबिऐ रसूल ने कहा आशिक़े मुसतफा ने कहा या रसूल अल्लाह लोगों के लिऐ।मेअ्यार है।कि उन्हे शोहरत मिल जाऐ दौलत मिल जाऐ इज़्ज़त मिल जाऐ मगर आपके दीवाने के लिऐ फुजू बि रब्बिल काबा आपके क़दमों मे मुझे मौत मिल गई मै कामयाब हो गया.हम सलाम पेश करते हैं।उन आशिक़ो की बारगाह मे जिन्होंने ये कहा कि.मै वो सुन्नी हूँ।जमीले क़ादरी मरने के बाद

मेरा लाशा भी कहेगा अस्सलातो वस सलाम

अल्लामा जमील रज़ा क़ादरी फरमाते हैं।.

सर क़लम करदो मेरा या काट दो मेरी ज़बाँ
मेरी नस नस मे बसा अस्सलातो वस्सलाम

## ***हज़रते अबू मूसा रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हु का इशक़े रसूल***

हज़रते अबू मूसा रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हु कहते हैं।कि मै आठ साल से चैन से नही सो पाया हूँ।कहा कि हुज़ूर की बारगाह मे था एक वाक़िया ऐसा देख लिया कि जंग हो रही थी और मै उस जंग मे था कि उतबा बिन गज़वान नाम के एक सहाबी थे.उन्होंने अपने हाँथ से तलवार चलाते चलाते एक दम ग़ैर मामूली काम किया कि अपनी तलवार अपनी आँख पर मारी आँख का गुल्ला नीचे गिर गया आप फरमाते हैं।कि मै उनके क़रीब चला गया और रोने लगे लोग उसकी हालत को देख कर उसकी आँख के छिचड़े दिख रहे थे.खून निकलता था मैने पूँछा क्या हुआ उतबा तूने ये क्या किया?वो कहने लगे कि जब मै तलवार चलाता था.तो उस वक़्त मेरी ग़ैर मेहरम पर एक नज़र पड़ गई एक तरफ एक आँख और मुझ से बद निगाही हो गई फौरन मुझे अपने नबी की एक हदीस याद आई कि नबी ने फरमाया कि जो शख्स बद निगाही करेगा उसकी आँख मे आग भर दी जाऐगी बस फिर मैने अपनी आँख का गुल्लाह निकाल कर फेंक दिया कि ये मेरे जहन्नम मे जाने सबब बन सकता है।.

गुलामाने मुहम्मद जान देने से नही डरते
ये सर कट जाऐ या रह जाऐ कोई परवाह नही करते
खुदा से डरने वाले मौत से हर गिज़ नही डरते
मर्दे हक़ बातिल के आगे मात खा सकते नही
सर कटा सकते हैं।लेकिन सर झुका सकते नही